Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

SLA–225

B.A. Part–III Due of B.A. Part–II (Supplementary) Examination, 2022

राजस्थानी साहित्य

Paper - II

(मध्यकालीन राजस्थानी गद्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

(सवालां रा जवाब राजस्थानी या हिंदी में दिया जाय सकै।)

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सगळा **दस** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। (उत्तर-सीमा **50** सबद)। हरेक सवाल **2** अंक रो है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात मांय सूं किणी **पाँच** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। (उत्तर-सीमा **200** सबद)। हरेक सवाल **8** अंक रो है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार मांय सूं किणी **दो** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। (उत्तर-सीमा **500** सबद)। हरेक सवाल **20** अंक रो है।

खण्ड–अ

1. नीचै लिख्या सवालां रा उत्तर लिखो–

(i) सातल-सोम कुण अर कठै रा हा ? थोड़ीक ओळखांण कराओ।

(ii) हाडै सूरजमल सूं लाखपसाव पावणियैं कवि रो नाम-गाम बताओ।

(iii) पाबूजी राठौड़ री वात मुजब बूड़ौजी री जोड़ायत डोडगहली रो पीहर कठै हो अर बठै कुण राज करता ?

(iv) ''चंगै मांढू घर रैया, अै त्रिय अवगुण होय'' इण ओळी में जगदेव पंवार कुणसै तीन अवगुणां री बात करै ? समझाओ।

(v) सयणी चारणी बाबत मुंछाळै मालदेव नैं पातसाह काईं पूछियो अर आगै काईं हुयो ? संक्षेप में बताओ।

(vi) 'कहवाट विलास' ग्रंथ रै सरूआत में रचनाकार किण नगरी अर राजा रो बरणाव करै ?

(vii) 'कहजो ऊक भाणेज नैं, कठ पिंजर कहवाट' ओळी रो अरथ अर मंतव्य उघाड़ो।

(viii) सुजाणसाह कुण अर किसोक मिनख हो ?

(ix) 'चहकी बांई चीबरी, आडो भुयंग विसेस' ओळी में आयोड़ा सुगन-सरोधां रो सार समझाओ।

(x) 'वचनिका' सूं आप काईं समझो ? बताओ।

खण्ड-ब

2. नीचै लिखी ओळियां री प्रसंग सेती व्याख्या करो-

भड़ बंका बानैत, जोध लंक लूटण जेहा।

निडर सिंह नखतैत, अप्रबळ पंडव अेहा।

आपै रिण ओछाव, धसै सनमुख खग धारां।

राज दंतां दै घाव, हकै अरिपाल हजारां।

भिड़जांम उरस छिबता बहै, जोध चसम बीजूजळा

कर जोस चढ्या पाटण कजै, अेक अेक सूं आगळा॥

3. रावण ऊपर राम, कंस ऊपर जांणै किसन।

सिव दिख ज्याग संग्राम, इण विध चढ़ियो ऊकड़ो॥

कोपै रांम कंठीर, मद भांजण गजराज मन।

भमंग पीठ पग भीर, इण विध चढ़ियो ऊकड़ो॥

4. सहसलिंग तळाव सिद्धराज जैसिंघदेवजी करायो छै। तिणी पाळ ऊपरां मोटो बड़ छै, तिण हेठै घोड़ां सूं उतरिया। घोड़ां मै टहलाया, लीयलिया छांटिया, पाणी दिखाइयो। घोड़ा कायजै हुवा ऊभा छै, चोकड़ा चाबै छै। कुं तोसो थो, तिको काढि दोनूं ई सिरावणी कीधी। तिसै जगदेवजी कह्यो-चावड़ीजी, राजि घोड़ां नैं लियां अठै विराजिया रहिज्यो। हूं नगर मांहि जाय काई हवेली भाड़ै ले, पछ राज नैं ले जावस्यां, नै बेहू जणां साथै फिरता डूंब-डूंबणी ज्यूं फिरता रूड़ा न दीसां। तरै चावड़ी कह्यो-पधारीजै। तरै जगदेव तरवार कटारी ले नै नगर मांहे हवेली भाड़ै पूछै छै।

5. राजा ओडण रीझियो, अवर न आवै दाय।

अवर ओस-जळ सारिखी, वेगां जाहि विलाय॥

सुणि जसमल राजा कहै, मैं तो लागी दीठ।

जीवां ता विरचां नहीं, जाणि कप्पड़ै मजीठ॥

राव कहै जसमल सुणो, महलां देखण आव।

महलां दीठां बीहिजै, (म्हां) सिरकणां रो साव॥

6. बाई! म्हे तो बटाऊ छां। तारै कह्यो—बटाऊ तो दोय, तिकै किसा ? अेक तो सूरज अर दूसरो चंद्रमा। थे किसा बटाऊ छो वीराजी। थे साच बोलो, थे कुण छो। ..... बाई! म्हे तो छां प्राहुणां। ..... प्राहुणां तो दोय, तिकै किसा ? अेक तो धन अर दूजो जोबन। थे किसा प्राहुणां छो ? वीरा! थे साच बोलो, थे कुण छो। ..... बाई! म्हे तो राजा छां। ..... राजा तो दोय, तिकै किसा ? अेक तो इंद्र अर दूजो यम। थे किसा राजा छो। वीरा! थे साच बोलो, थे कुण छो ?

7. मोहता नेणसी अर वांरी ख्यात री ओपती ओळखाण कराओ।

8. ऊको भाणजो 'कहवाट-विलास' रो अेक महताऊ किरदार है, जको आपरी वीरता, धीरता, वचन प्रतिपालन, सामधरम अर बुद्धिमता सारू ख्यातनाम है। कथानक नैं केंद्र में राखतां इण कथन री सारथकता सिद्ध करो।

खण्ड–स

9. 'कहवाट विलास' रै आधार माथै इण ग्रंथ रै नायक 'राजा कहवाट' रै चरित्र री उल्लेखणजोग विशेषतावां नैं ओपता उदाहरणां सेती उजागर करो।

10. 'राजस्थानी वात साहित्य : नामकरण, वर्गीकरण अर विशेषतावां' सिरैनाम सूं अेक आलोचनात्मक निबंध लिखो।

11. ''उमा दे भटियाणी री वात मध्यकाल में नारी स्वाभिमान अर समरपण रो दाठीक दाखलो है'' इण कथन रै आलोक में संदर्भित वात री विरोळ करो।

12. मध्यकालीन राजस्थानी गद्य री सांवठी परम्परा रो परिचय देवतां थकां किणी दो विधावां री ओपती ओळखाण कराओ।